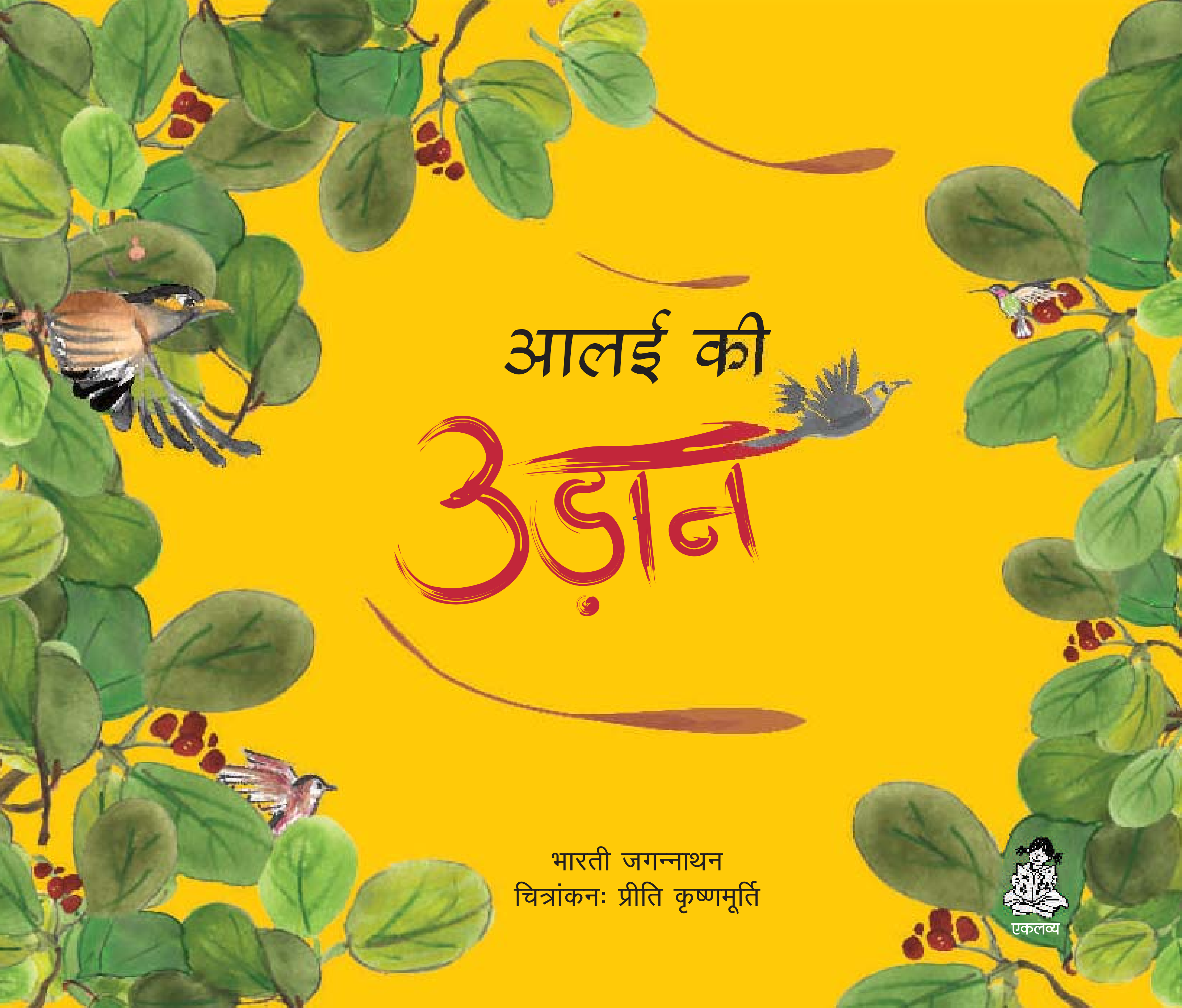

आलई की उड़ान

भारती जगन्नाथन
चित्रांकनः प्रीति कृष्णमूर्ति

एकलव्य

आलई की उड़ान

भारती जगन्नाथन
चित्रांकनः प्रीति कृष्णमूर्ति

एकलव्य

नंदिनी, नित्या और श्रुति के लिए

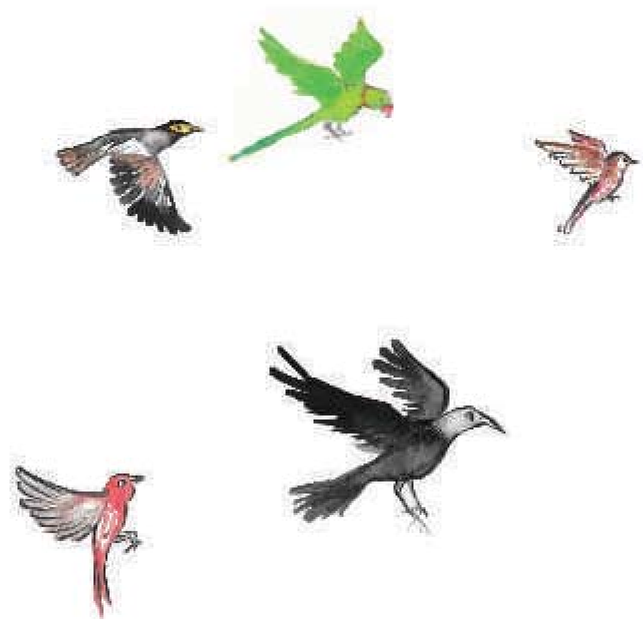

आलई की डालियों पर सैकड़ों गौरैया, बुलबुल, मैना और तोते रहते थे। सवेरे-सवेरे, जब उल्ली अपनी रात की सैर से लौटती, वे सब के सब भोजन की तलाश में उड़ जाते। शाम होते ही वे लौट आते, चहचहाते, एक-दूसरे को उन जगहों के बारे में बताते जो दिन भर में उन्होंने देखी होतीं।

“बताओ तो आज मैं कहाँ हो आई,” चुइक गौरैया बोली। “मैं ऐसे खेत के ऊपर से उड़ी जहाँ सरसों लहलहा रही थी – कितना गहरा, प्यारा-सा पीला रंग था उसका। अरे क्या लज़ीज़ कीड़े खाने को मिले वहाँ, पूछो मत!”

"और मैंने देखा एक पर्वत," शेखी बघारते हुए हरीले तोते ने कहा। "कितना ऊँचा था वो... और उसने पहन रखी थी चमचमाती सफेद बर्फ की टोपी। मैं तो बस उसके ऊपर से उड़ने ही वाला था, पर मुझे याद आया कि स्वेटर पहनना तो मैं भूल ही गया था।"

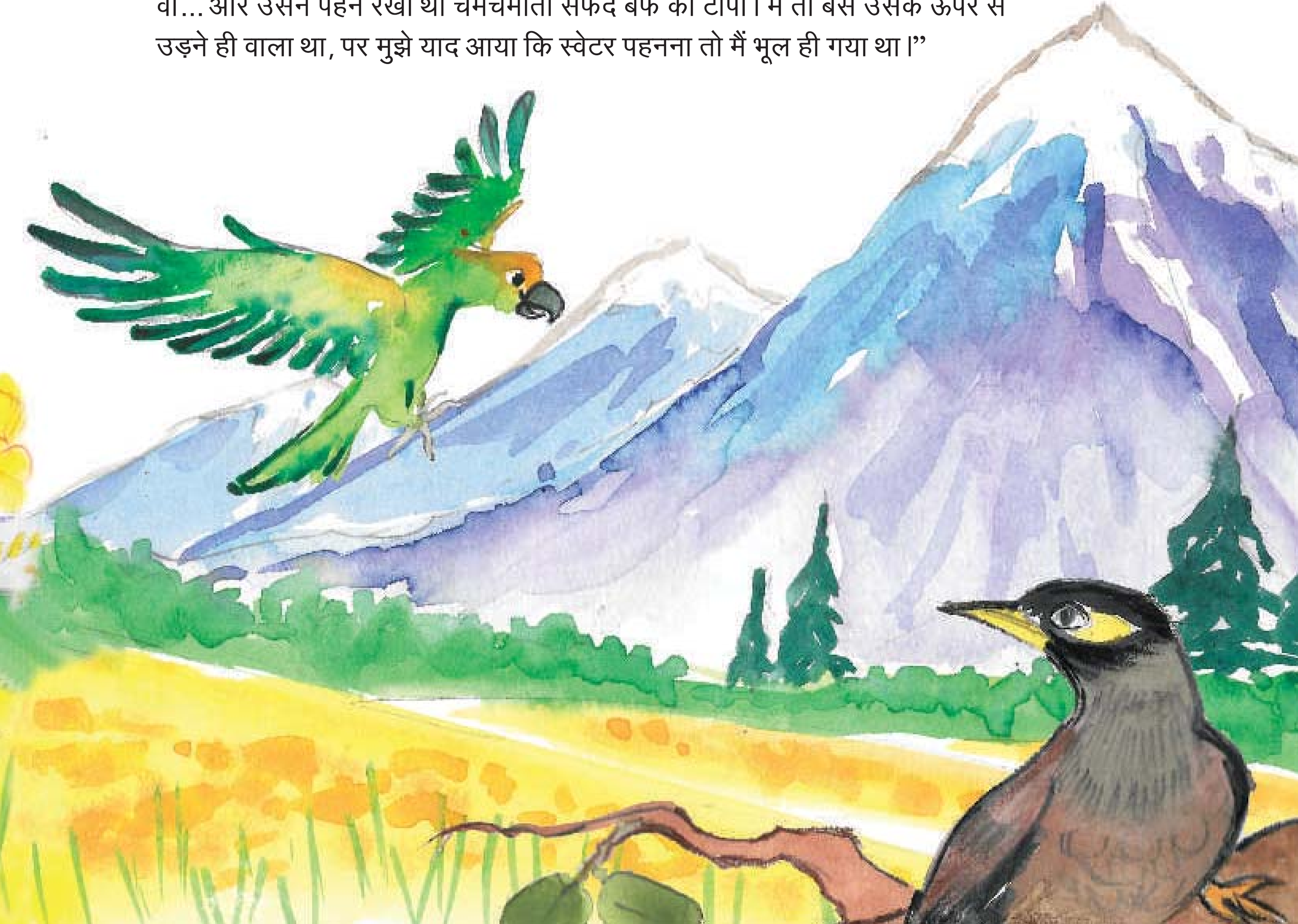

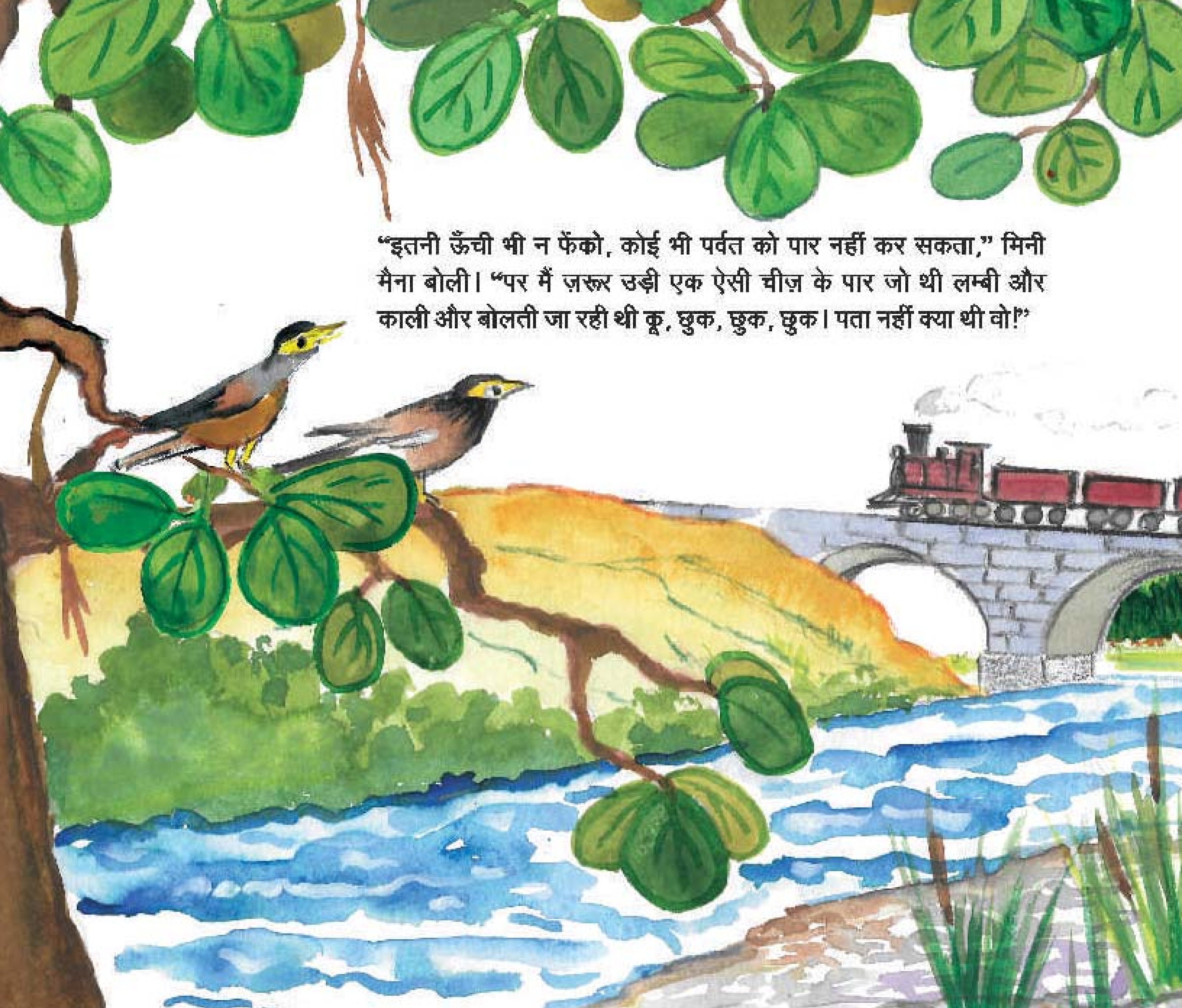

"इतनी ऊँची भी न फेंको, कोई भी पर्वत को पार नहीं कर सकता," मिनी मैना बोली। "पर मैं ज़रूर उड़ी एक ऐसी चीज़ के पार जो थी लम्बी और काली और बोलती जा रही थी कू, छुक, छुक, छुक। पता नहीं क्या थी वो!"

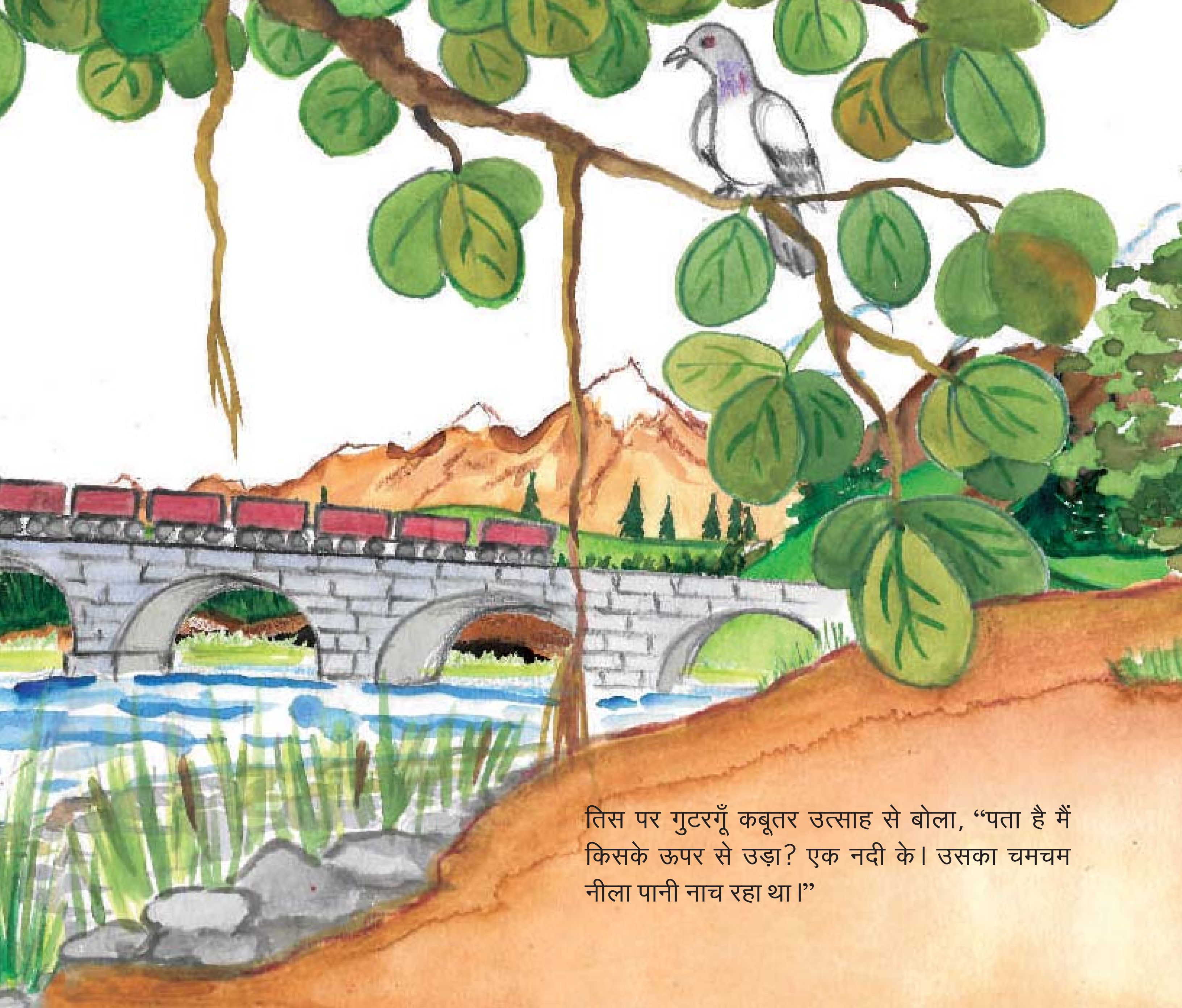

तिस पर गुटरगूँ कबूतर उत्साह से बोला, “पता है मैं किसके ऊपर से उड़ा? एक नदी के। उसका चमचम नीला पानी नाच रहा था।”

“और मैं उड़ा एक बड़े शहर के ऊपर से,” काँव कौआ बोला। “शहर की सड़कों पर लोग ही लोग थे, और बाज़ार भरे पड़े थे तरह-तरह के रंगबिरंगे सामान से। मैंने झपट्टा मारा और दबोच लिया एक स्वादिष्ट पकौड़ा। ओह! कितना मज़ेदार था सब कुछ।”

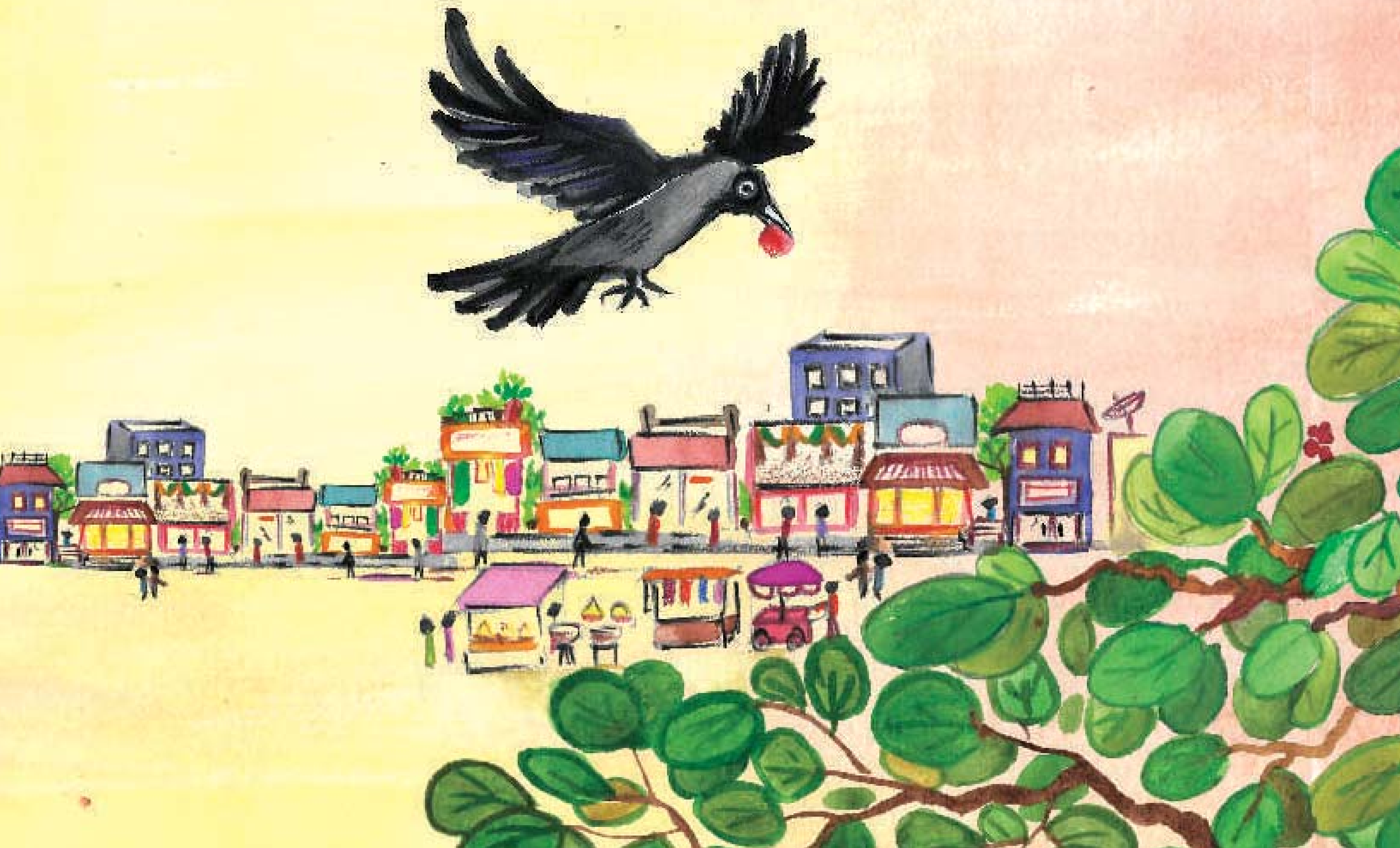

आलई इत्मीनान से उनकी बातें सुनती। फिर फैलाती अपनी बाँहें, नहीं, नहीं, डालियाँ। उल्ली निकल पड़ती रात की सैर पर और बाकी पक्षी सो जाते गहरी नींद में। उस विशाल पुराने पेड़ पर एक चुप्पी-सी छा जाती जो टूटती बस पत्तियों के साथ हवा की फुसफुस से।

यह सब होता रहा हर शाम, कई, कई, कई सालों तक, और आलई भी हो गई बहुत विशाल। फिर एक दिन, आलई अनमनी-सी होने लगी। न जाने कब से वो उन सब किस्सों को सुनती आई थी जो गौरैया और बुलबुल उसे सुनातीं। लेकिन अब उसका भी मन होने लगा था उन नदियों, पर्वतों और सुन्दर-सुन्दर खेतों को खुद देखने का। वो उन खेतों, उन फूलों तक जाए कैसे, यह सोच-सोचकर वह उदास रहने लगी। इतनी उदास कि उसके पत्तों को सी-सी कर अपना घोंसला बनाने वाली दर्जिन चिड़ियों को भी वह उदासी छूने लगी।

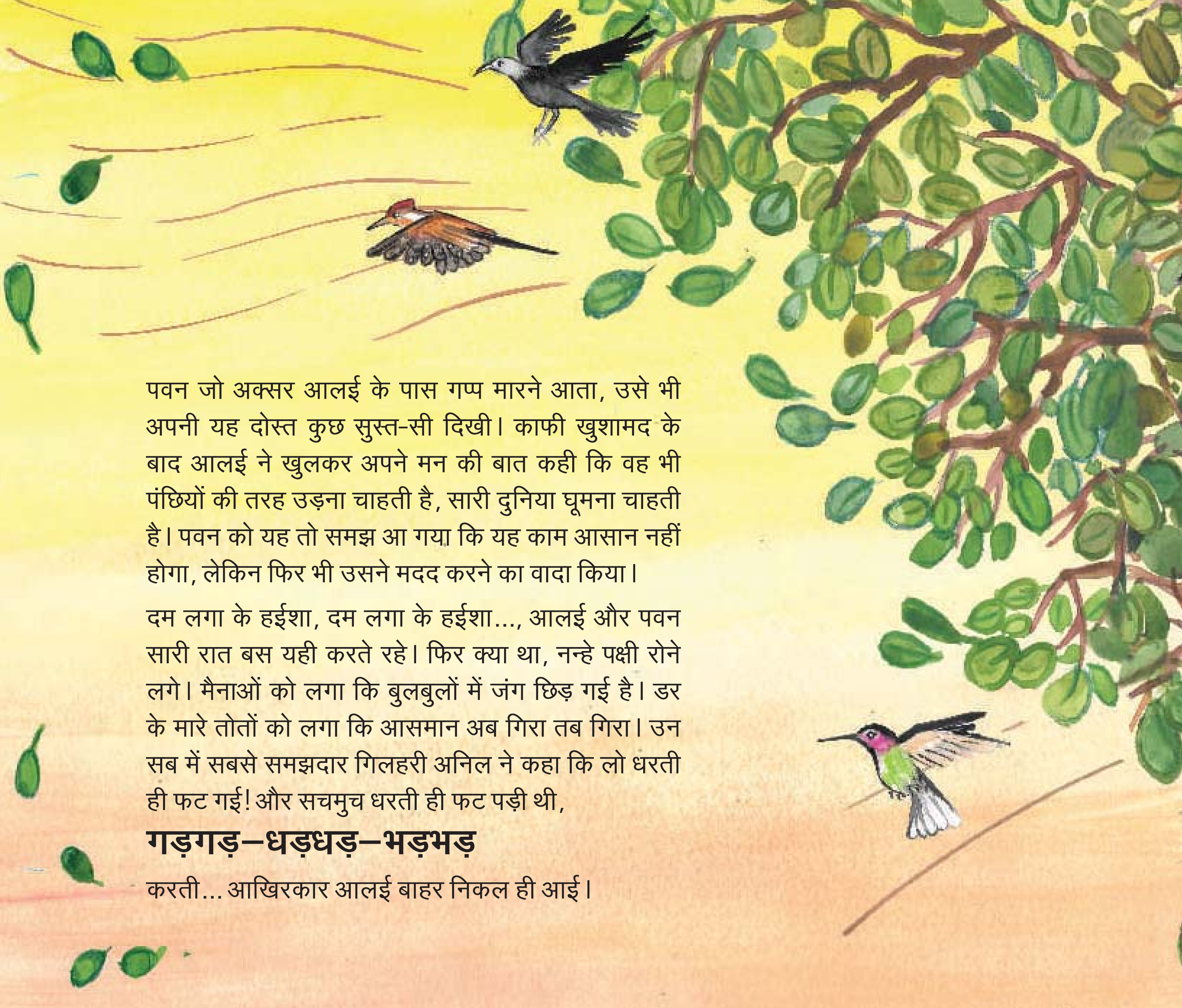

पवन जो अक्सर आलई के पास गप्प मारने आता, उसे भी अपनी यह दोस्त कुछ सुस्त-सी दिखी। काफी खुशामद के बाद आलई ने खुलकर अपने मन की बात कही कि वह भी पंछियों की तरह उड़ना चाहती है, सारी दुनिया घूमना चाहती है। पवन को यह तो समझ आ गया कि यह काम आसान नहीं होगा, लेकिन फिर भी उसने मदद करने का वादा किया।

दम लगा के हईशा, दम लगा के हईशा..., आलई और पवन सारी रात बस यही करते रहे। फिर क्या था, नन्हे पक्षी रोने लगे। मैनाओं को लगा कि बुलबुलों में जंग छिड़ गई है। डर के मारे तोतों को लगा कि आसमान अब गिरा तब गिरा। उन सब में सबसे समझदार गिलहरी अनिल ने कहा कि लो धरती ही फट गई! और सचमुच धरती ही फट पड़ी थी,

गड़गड़–धड़धड़–भड़भड़

करती... आखिरकार आलई बाहर निकल ही आई।

हवा को चीरती आलई उड़ी जा रही थी, उसकी ढेर सारी जड़ें और डालियाँ भी पूरी मस्ती में झूल रही थीं। खयालों से भी तेज़ वो चली जा रही थी – जंगलों, मैदानों व खेतों के पार, और पहाड़ियों व घाटियों के ऊपर से। उसने तो सूरज को भी मानो ढक ही लिया था, और सारे लोग अपने घरों से बाहर निकल आए थे यह विचित्र नज़ारा देखने।

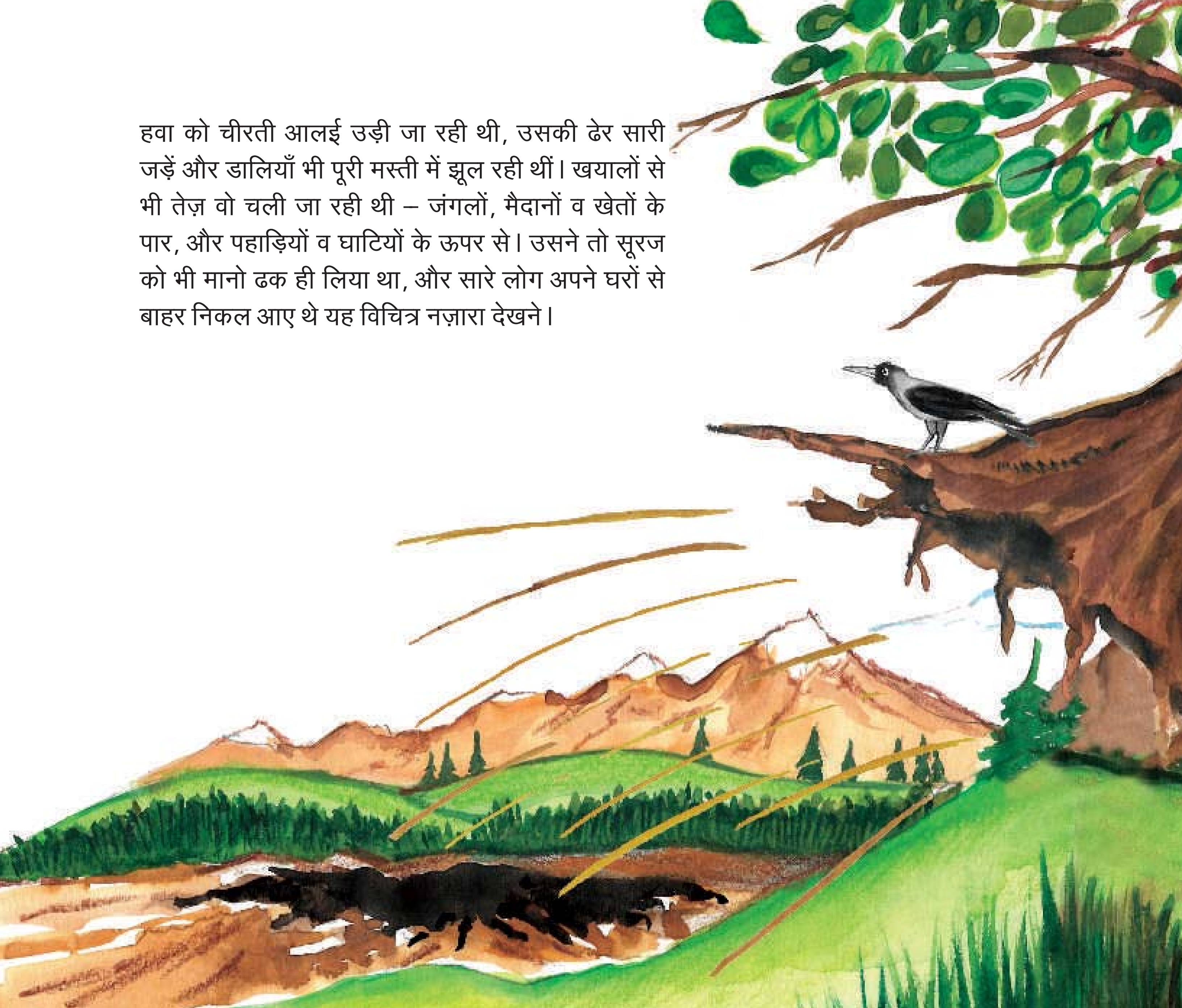

जब आलई खेत-खलिहानों के ऊपर से गुज़र रही थी तो वो उसको देखकर चिल्लाने लगे, “हे ऊपर वाले! क्या वो कोई पेड़ उड़ रहा है? अगर यह गिरा तो हमारी सारी फसल चौपट हो जाएगी।” पर आलई तो उड़ती गई, दूर बहुत दूर।

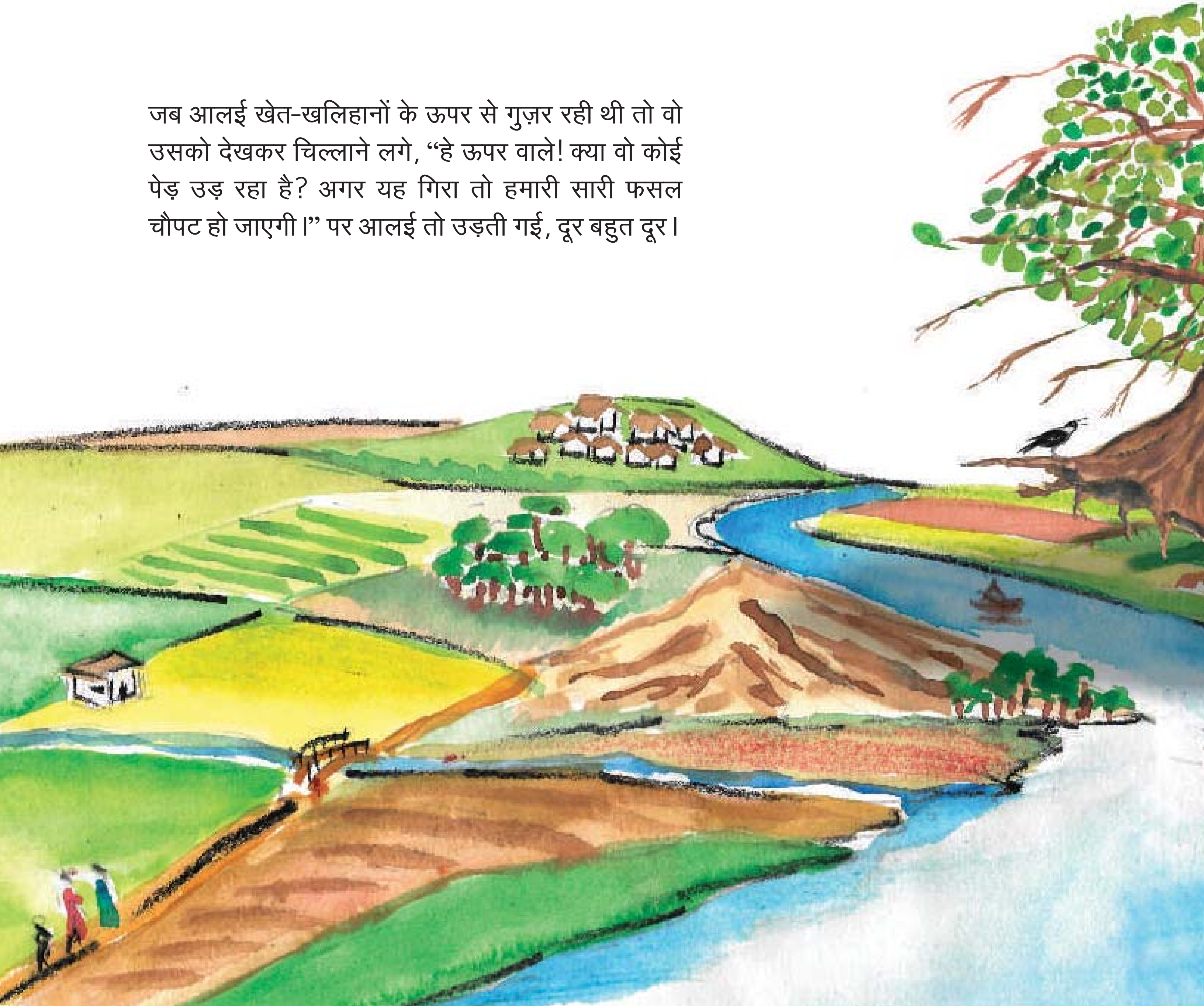

पर्वत ने घबराकर ऊपर देखा और सिर पर हाथ रखकर बोला, “यह पेड़ अगर मेरे ऊपर गिरा तो मेरा नुकीला, सुन्दर शिखर चपटा हो जाएगा!” “तेज़ी से उड़ जाओ,” पर्वत बोला और आलई चल दी दूर, बहुत दूर...

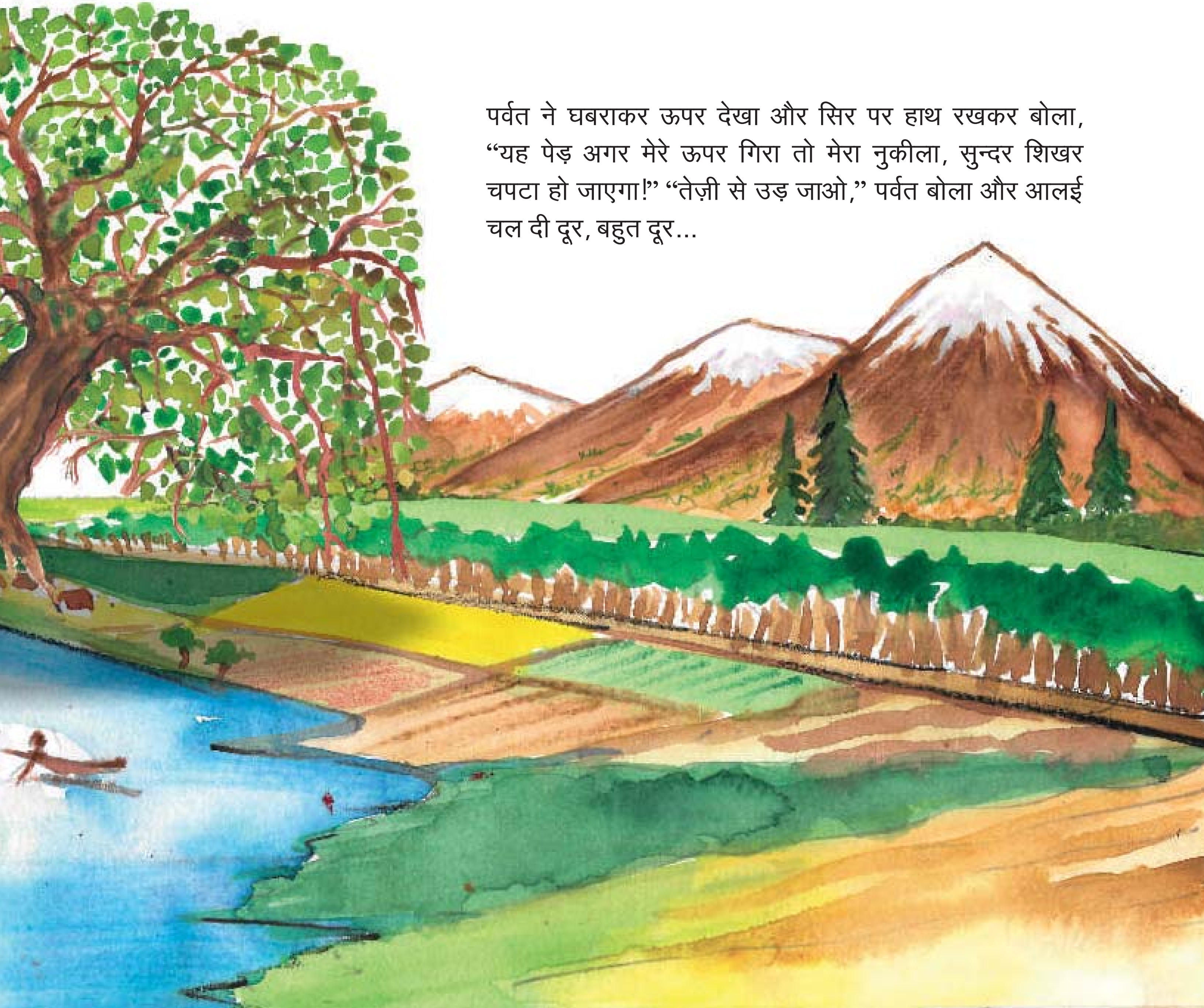

नदी ने भी उस बड़े पेड़ को उड़ते हुए देखा और बोली, “मैं क्या करूँ? यह पेड़ जो मेरे अन्दर गिर गया तो मेरा सारा पानी छपाक से बाहर आ जाएगा!” पर आलई गिरी नहीं। वह चल दी दूर, बहुत दूर...

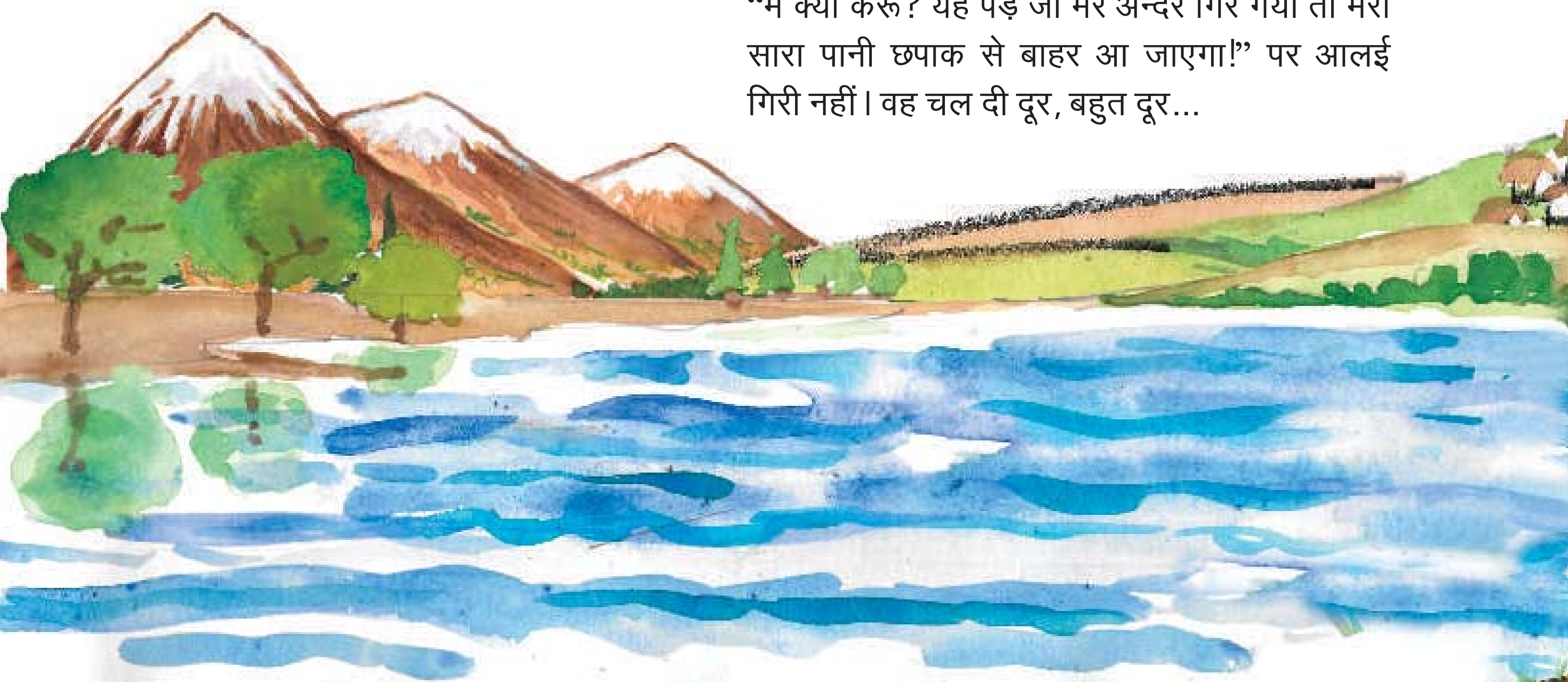

आलई अब एक रेल पटरी के पार उड़ने लगी और उस पर से चलती रेल भौंचक्की रह गई। “मैं कहाँ-कहाँ नहीं गई हूँ, पर आज तक मैंने किसी पेड़ को यूँ उड़ते नहीं देखा,” रेल ने सोचा। “क्या हो, अगर यह मेरी पटरी पर गिर पड़े? फिर मैं कैसे दौड़ पाऊँगी?” लेकिन तब तक आलई उड़कर दूर जा चुकी थी, एक नज़र शहर को देखने।

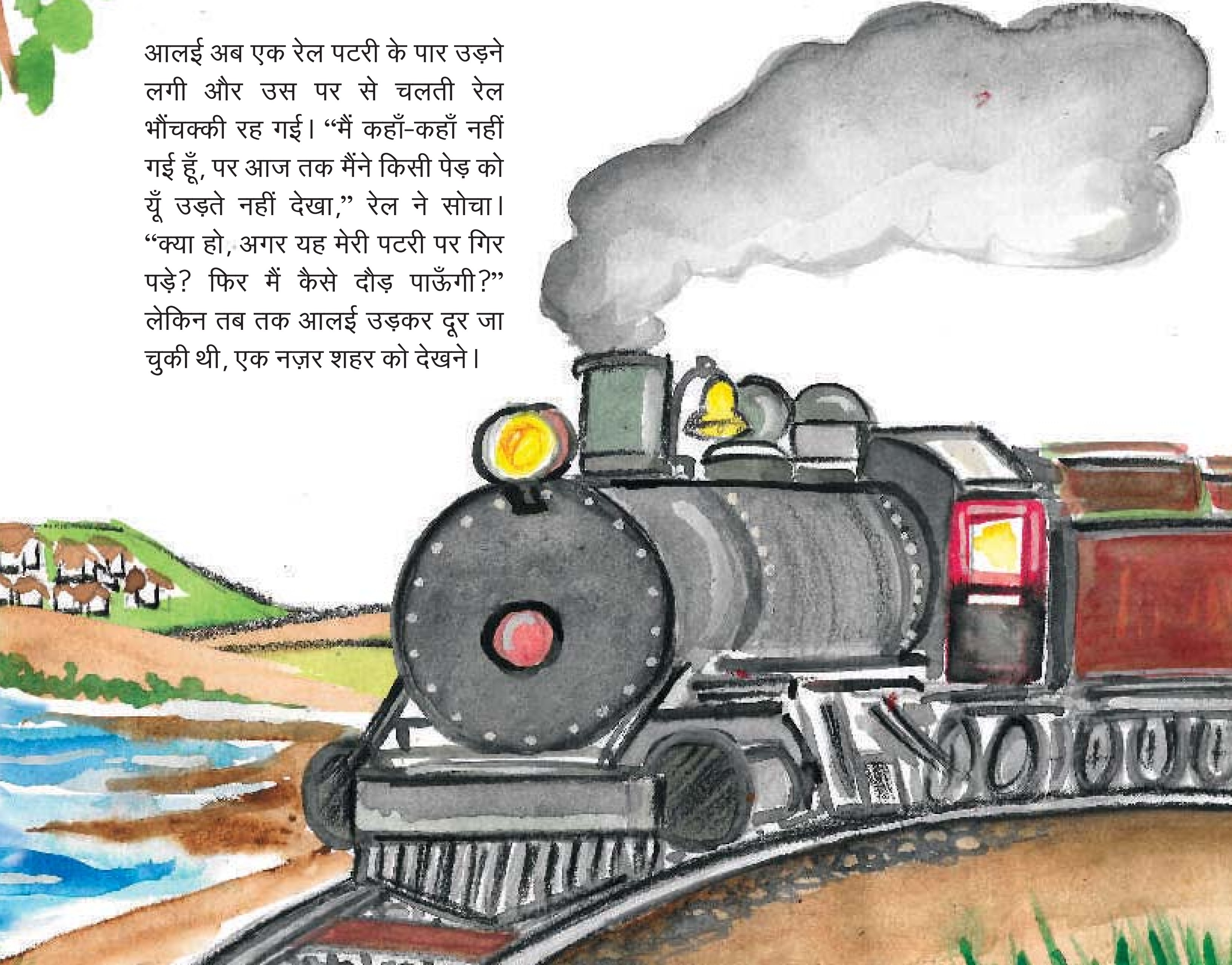

लोगों की नज़रें जब ऊपर गईं तो उन्होंने अपने सिर ढाक लिए और बोले, "बाबा रे बचाना! कभी किसी ने उड़ते हुए पेड़ के बारे में सुना है क्या? इतना बड़ा पेड़ जो हमारे ऊपर गिरा तो हमारा तो कचूमर बन जाएगा!"

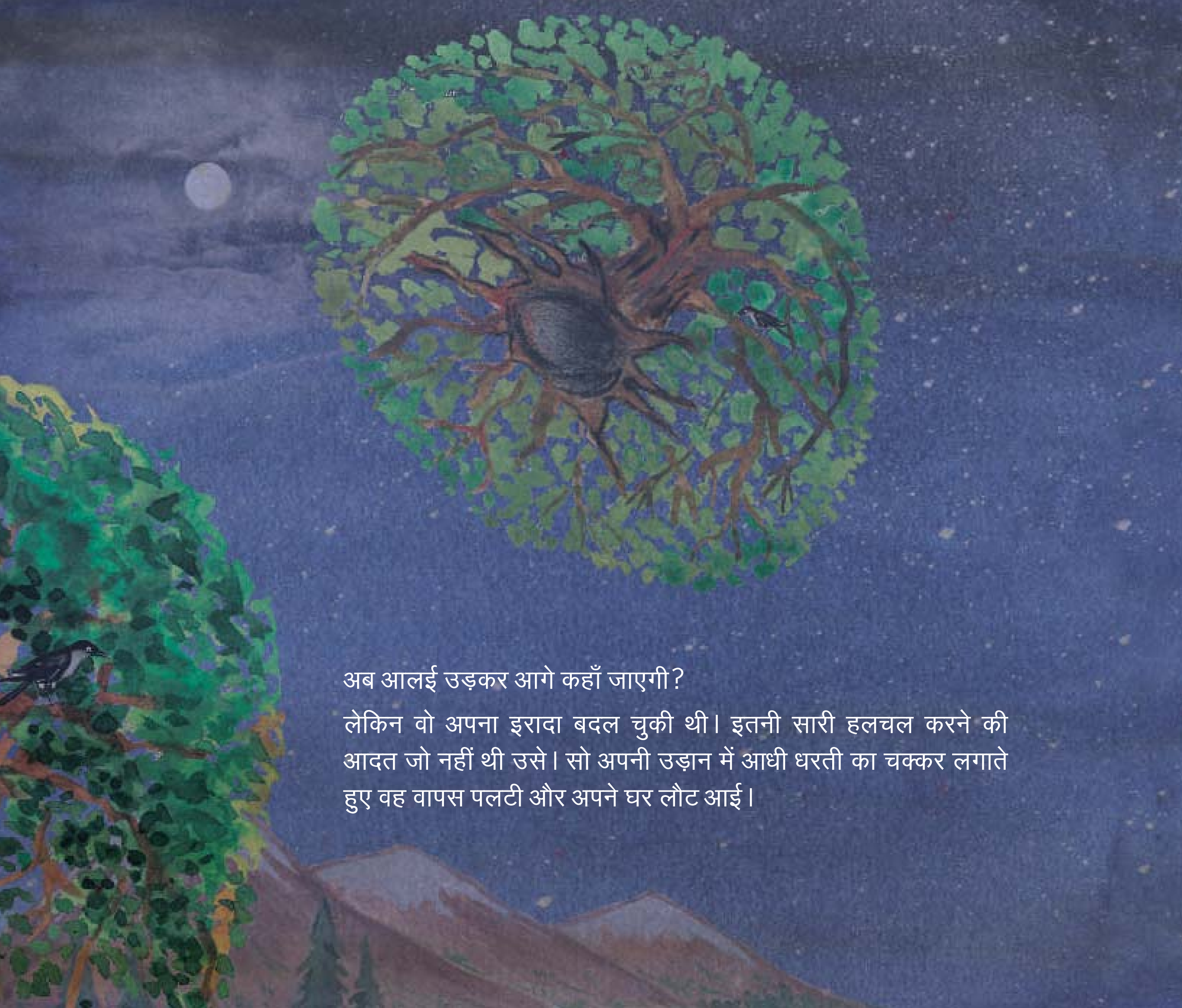

अब आलई उड़कर आगे कहाँ जाएगी?

लेकिन वो अपना इरादा बदल चुकी थी। इतनी सारी हलचल करने की आदत जो नहीं थी उसे। सो अपनी उड़ान में आधी धरती का चक्कर लगाते हुए वह वापस पलटी और अपने घर लौट आई।

बहुत हिलने-डुलने और इधर-उधर होने के बाद वो अपनी पुरानी जगह पर फिर से जम गई। गौरैया, मैना, बुलबुल, तोते और गिलहरियाँ, सब चैन की साँस लेने ही वाले थे कि तभी आलई ने बड़ी-सी उबासी ली और अपनी डालियाँ फैला दीं। बस फिर क्या था, सब के सब डर के मारे फिर बाहर भागे।

पर आलई का फिर से उड़ान भरने का कोई इरादा न था। अब जब भी आलई बोर होती है, दोस्त पवन आता है और ज़ोरों से फूँक मारता है – और आलई भेज देती है अपने पत्तों को यहाँ-वहाँ उड़ने। और लाखों, करोड़ों बरगदिया पत्ते उड़ते फिरते हैं दुनिया भर में... तुमने भी तो देखे होंगे – उड़ते, लहराते बरगदिया पत्ते?

आलई की उड़ान

AALAI KI UDAAN

कहानीः भारती जगन्नाथन
अँग्रेज़ी से अनुवादः मनोहर नोतानी
चित्रांकनः प्रीति कृष्णमूर्ति
डिज़ाइनः कनक शशि

भारती जगन्नाथन, दिसम्बर 2016
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

प्रीति कृष्णमूर्ति, दिसम्बर 2016
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। इसी तरह के उद्देश्यों से इनमें किसी भी प्रकार के बदलाव भी किए जा सकते हैं। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

दिसम्बर 2016/ 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 220 gsm पेपरबोर्ड (कवर)

ISBN: 978-93-85236-16-7

मूल्यः ₹ 55.00

प्रकाशकः एकलव्य

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोनः +91 755 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया 100 gsm मेपलिथो कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

आधी रात को
अचानक ज़ोरों की
आवाज़ें होने लगीं।
क्या आसमान
गिरने वाला है?
क्या धरती फट
रही है? आखिर हो
क्या रहा है?

एकलव्य

मूल्य: ₹ 55.00

9 789385 236167

parag

AN INITIATIVE OF THE TATA TRUSTS